Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 01, No. 08, October. 2024

मुगलकालीन उद्योग-धंधे —एक संक्षिप्त अध्ययन

***अभय प्रताप सिंह तोमर**
शोध अनुसंधित्सु
इतिहास विभाग
साहू राम स्वरूप महिला महविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश)
डॉ सीमा गौतम
सह आचार्य, इतिहास विभाग
साहू राम स्वरूप महिला महविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश)

सारांश

मुगल काल के दौरान भारत के प्रमुख उद्योगों में सूती वस्त्र, रेशम, ऊनी वस्त्र और विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प शामिल थे। वस्त्र निर्माण जैसे कि सूती और रेशमी कपड़े, कालीन, शॉल, ऊनी गलीचे आदि प्रमुख रूप से देश के विभिन्न हिस्सों में बनाए जाते थे। भारतीय बुनकर अपनी बुनाई कौशल और उच्च गुणवत्ता वाले कपड़ों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध थे। भारत के इन उद्योगों का विकास बड़े स्तर पर राजकीय संरक्षण और कारीगरों की पैतृक शिक्षा पर आधारित था, जिसमें समाज के सभी वर्गों की आवश्यकता अनुसार उत्पाद उपलब्ध कराए जाते थे। मिट्टी के बर्तन, लकड़ी, कागज, हथियार निर्माण, पीतल, काँसा, तांबा, नमक, शोरा और अन्य कृषि उत्पादों के उद्योग भी मुगल काल में प्रमुख रहे। उद्योगों की समृद्धि मुगल साम्राज्य की स्थिरता और प्रांतीय प्रशासन पर आधारित थी। मुगलों के बाद की राजनैतिक अस्थिरता, अंग्रेजी शासनकाल में उद्योगों के विनाश, और यूरोपीय व्यापार के विस्तार ने स्थानीय कारीगरों और उद्योगों को प्रभावित किया। भारतीय उद्योग विदेशी प्रतिस्पर्धा के चलते अधिक प्रगति नहीं कर सके और अंग्रेजों की नीतियों ने धीरे-धीरे उद्योगों के उपनिवेशीकरण और संपूर्ण नष्ट होने का मार्ग प्रशस्त किया। इस शोध का उद्देश्य मुगलकालीन भारत में उद्योगों की विविधता, उनकी विशिष्टता और उत्पादन विधियों के महत्व का अध्ययन करना है, साथ ही विदेशी व्यापार के अभाव और प्रशासनिक संरक्षण के प्रभावों के कारण उद्योगों पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण करना है।

कूट शब्द: मुगलकालीन उद्योग, भारतीय वस्त्र उत्पादन, हस्तशिल्प, विदेशी व्यापार, कारीगर प्रशिक्षण

मुग़ल भारत का सबसे बड़ा उद्योग सूती वस्त्र अथवा कपड़ा उत्पादन एवं इससे संबद्ध कार्य जैसे रेशम, सन और सूती रेशों से कटाई बुनाई, विरंजन और रंगाई आदि था जिसका उत्पादन देश के प्रत्येक कोने में किया जाता था। इस काल में सूती, रेशमी व ऊनी सभी प्रकार के कपड़ों का उत्पादन किया जाता था। अलग अलग शिल्प उत्पादन में लगे शिल्पकारों में से लगभग दो तिहाई बुनकर थे। अनेक किसान बुनकर भी थे। भारतीय बुनकर कई शताब्दियों से इस

* Corresponding Author: Abhay Pratap Singh Tomar
Email: pratapabhay494@gmail.com
Received 09 Oct 2024; Accepted 18 Oct 2024. Available online: 30 Oct 2024.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

बात के लिए प्रसिद्ध थे कि वे नरम से नरम, महीन या मोटा कपड़ा तैयार कर सकते थे। अच्छे कालीन और शॉल भी भारत में तैयार किए जाते थे। बर्नियर के अनुसार ऊनी शॉल कश्मीर में बनाई जाती थी। ऊनी गलीचों का उत्पादन आगरा, जौनपुर, अलवर और जाफरवाल में होता था। भारत में अधिकांश सूती कपड़े का उत्पादन होता था। आईने-अकबरी और यूरोपीय कंपनियों के रिकॉर्ड में सूती कपड़े की तमाम किस्मों के नाम मिलते हैं। सहारनपुर का खासा और चौतर, बनारस का गंगाजल, झोना, मिहिरकुल और मंदिल, दिल्ली की छींट आदि सूती कपड़ों की किस्में थीं। हिंदुस्तान के सूती कपड़े का उद्योग उस समय तक सफलतापूर्वक चलता रहा जब तक इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति नहीं हुई और ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अंतर्गत भारत के महत्वपूर्ण उद्योगों को नष्ट करने का प्रयास नहीं किया गया।

रेशम का उत्पादन कासिम बाजार, हुगली, ढाका आदि क्षेत्रों में किया जाता था। कपड़े के समान रेशम का उत्पादन भी कई चरणों में किया जाता था, रेशम के कोए बनाना, धागा कातना और रेशमी कपड़ा बनाना। भारतीय रेशम को यूरोप में काफी पसंद किया जाता था। रेशम की प्रमुख किस्में – मखमल, पटोला, तसर, सैटिन, असम का मूंगा रेशम आदि।

भारत में कुछ शहर उन तैयार करने के लिए भी प्रसिद्ध थे। रेगिस्तान एवं पहाड़ी क्षेत्रों में भेड़ पालन बड़े पैमाने पर होता था। इस कारण कश्मीर, पश्चिमी राजस्थान काबुल, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर आदि शहर ऊन तैयार करने के लिए प्रसिद्ध थे। अच्छी प्रकार की ऊन तिब्बत से आई थी। कश्मीर में मुलायम शॉल, विभिन्न प्रकार के ऊनी वस्त्र एवं कंबल आदि तैयार किए जाते थे। बुरहानपुर, लाहौर, आगरा, जौनपुर, पटना, अमृतसर आदि केंद्र वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध थे।

मुगल काल में मिट्टी के बर्तन बनाने का काम पूरे देश में होता था। दिल्ली, चुनार, और बनारस मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए विख्यात थे। मुगल काल में मिट्टी की मूर्तियां और खिलौने बनाने को उद्योग लगभग बंद सा हो गया था। इसका मुख्य कारण इस्लाम का प्रसार था जिसमें आदमी तथा जानवरों के चित्र एवं मूर्तियां बनाना निषेध था, फिर भी केंद्रीय एवं प्रांतीय राजधानी से दूर स्थित ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों के खिलौने आदि बनाने का काम चलता रहा।

कश्मीर, थट्टा, भड़ोच और कर्नाटक लकड़ी की कलात्मक वस्तुएं बनाने के लिए प्रसिद्ध थे। मुख़्यता नाव, जहाज, बैलगाड़ी और लकड़ी की पालकियां बनाई जाती थी। धनुष और तीर बनाने के लिए सरहिंद, सूरत और मुल्तान प्रसिद्ध थे।

मुगलकालीन समाज में लोहार, सुनार आदि का बहुत महत्व था क्योंकि समाज के हर वर्ग लोगों को उनकी आवश्यकता पड़ती थी। सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल होने वाला महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ लोहा था।

लोहे से कृषि यंत्र आदि बनाए जाते थे जैसे हल, खुदाई के लिए कुदाल, लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी आदि। लोहे के आयात का कोई भी साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि लोहा देसी उत्पादन से प्राप्त किया जाता था। लोहे का प्रयोग मुख्यता हथियार बनाने के लिए होता था। भारतीयों ने तलवार, कटार भाला आदि परंपरागत हथियारों के बनाने में श्रेष्ठता प्राप्त की थी परंतु वे बहुत अच्छे स्तर की तोप और बंदूक बनाने में सफल नहीं हुए थे इस क्षेत्र में फारस, तुर्की और यूरोप के देशों से पिछड़े हुए थे। हालांकि अबुल फजल वर्णन करता है कि अकबर ने ऐसी यांत्रिकी की विकसित की थी जिसकी सहायता से एक बार घोड़ा दबाने से एक ही साथ 17 बंदूकों से गोली दागी जा सकती थी। उन दिनों की एक भारी भरकम तोप मलिका -ए – मैदान थी जिसे एक तुर्की इंजीनियर मोहम्मद बिन हसन रूमी ने 1549 ईस्वी में बनाया था। इसका वजन 55 टन था और यह पंच धातुओं से बनाई गई थी जिसमें तांबा प्रमुख धातु थी। अबुल फजल के अनुसार अकबर की आयुधशाला में लोहे की तोपों और बंदूकों के नाल बनाए जाते थे।

काँसा, पीतल और तांबा का प्रयोग मुख्यता बर्तन अथवा मूर्तियां आदि बनाने में किया जाता था। बनारस और उसके आसपास के क्षेत्रों में पीतल उद्योग, बंगाल में कांसे का उद्योग एवं दिल्ली और उसकी निकटवर्ती क्षेत्रों में तांबे का उद्योग प्रमुख रूप से होता था। हाथी दांत, चांदी और सोना आदि का प्रयोग मुख्यता आभूषण एवं मूर्तियां बनाने के लिए किया जाता था। हीरे की खानें गोलकुंडा और छोटा नागपुर में तांबे की खानें राजस्थान और मध्य भारत में थीं तथा सोना कुमाऊं की नदियों से निकाला जाता था।

शराब उद्योग भी भारत में बहुत बड़े पैमाने पर होता था परंतु अच्छी किस्म की शराब भारत में नहीं बनाई जाती थी। अच्छी किस्म की शराब यूरोप अथवा फारस से मंगाई जाती थी।

अफीम और नील बनाने के उद्योग भी महत्वपूर्ण थे और इनका निर्यात विदेशों में होता था। लाहौर और उसके आसपास के क्षेत्रों में नील का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में होता था जिसका प्रयोग रंगाई उद्योग में किया जाता था। रंगाई के कुछ अन्य महत्वपूर्ण केंद्र लखनऊ, अहमदाबाद, मछलीपट्टनम, फर्रुखाबाद, आगरा, ढाका, कासिम बाजार आदि थे।

मुगल काल में शोरे (Saltpetre) का उत्पादन बहुत अधिक मात्रा में होता था। इसका प्रयोग तोपखाने और बारूद के लिए किया जाता था जिसकी यूरोप में बहुत मांग थी इसलिए शोरे का उत्पादन और भी अधिक बढ़ गया। अलवर, पटना और अजमेर से शोरा प्राप्त होता था। पेलशार्ट (Pelsaert) ने शोरा बनाने की विधि का विस्तृत विवरण दिया है।

मुगल काल में चमड़े का प्रयोग विभिन्न प्रकार के समान बनाने में किया जाता था जैसे चमड़े के जैकेट जूते, घोड़े के लिए काठी तथा लगाम, तंबू, ढाल, तलवार के लिए म्यान, सामान रखने के थैले, चटाई, पानी की मशक, बैलगाड़ियों के पर्दे, आदि के लिए चमड़े की मांग रहती थी। विदेशों को निर्यात किए जाने वाली कुछ चीजों की पैकिंग के लिए चमड़े का प्रयोग किया जाता था। असम के जंगलों में हिरनों तथा साड़ों से चमड़ा बनाया जाता था। सबसे अच्छे किस्म का चमड़ा सिंध क्षेत्र से प्राप्त होता था।

समुद्र के तटवर्ती इलाकों में समुद्री पानी से नमक का उत्पादन भी किया जाता था। नमक का उत्पादन वाष्पीकरण प्रणाली द्वारा किया जाता था। नमक मुख्यता सूरत, खंभात की खाड़ी कच्छ का रन आदि से प्राप्त होता था। इन क्षेत्रों से नमक का बड़े पैमाने पर भारत में आंतरिक व्यापार होता था। अबुल फजल ने उन बंजारों को उल्लेख किया है जो नमक बिहार में लाते थे।

मुगल काल में कागज के प्रयोग का उल्लेख मिलता है किंतु यह उद्योग अधिक विकसित अवस्था में नहीं था। कागज मुख्यता पटना, दिल्ली, सियालकोट, खरपुरी, राजगीर, शहजादपुर आदि में बनता था। लाहौर तथा आगरा में स्थापित शाही कारखाने में भी कागज का उत्पादन होता था। सामान्यता प्रांतो तथा बड़े नगरों के बाहर कागज बनाने का छोटा गांव होता था जिसे कागजी मोहल्ला अथवा कागजीपुर कहा जाता था। फर्रुखाबाद में आज भी कागजी बाजार नाम की एक गली है।

मुगल काल में विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पादों जैसे नारियल, तिल, अरंडी, सरसों, गिगली आदि से तेल निकालने के उद्योग भी विकसित थे। नूरजहां ने इत्र एवं खुशबूदार तेल बनाने के क्षेत्र में कई नए प्रयोग किए थे। मूंझ की रस्सी बनाकर उनसे चारपाई एवं विभिन्न प्रकार की चटाइयां बनाई जाती थी। विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पादों से खुशबूदार तेल, इत्र, मसाले, दवाएं, शरबत आदि बनाए जाते थे। बेंत एवं बांस से टोकरी, चटाई, छत तथा झोपड़ी बनाने तथा सजाने के काम होता था। मुगल काल में पत्थर पर नक्काशी करने, कांच की बोतलें बनाने तथा जालीदार झरोखे तथा खिड़कियां तैयार करने के काम भी बड़े स्तर पर होते थे जो बादशाहों एवं अमीरों के मकान में काम आते थे। उड़ीसा तथा बंगाल में लाख पैदा होता था जिससे स्त्रियों के आभूषण जैसे– कंगन, कड़े, चूड़ियां तथा बच्चों के खिलौने आदि बनाए जाते थे। इसका मुख्य उद्योग गुजरात में होता था।

इस प्रकार भारत में सभी प्रकार के उद्योग थे लेकिन इनमें से बहुत कम उद्योग ही ऐसे थे जिनका विदेश में व्यापार किया जा सकता था। इस व्यवस्था में उत्पादकों की हैसियत निम्न कोटि की थी। मुगल साम्राज्य की स्थिरता और विस्तार के समय में उद्योग सफलतापूर्वक चलते रहे और आर्थिक समृद्धि होती रही परंतु व्यावसायिक आधार पर उद्योग को चला पाने के अभाव में भारतीय उद्योग विशेष प्रगति नहीं कर सके। कारीगरों की कार्य कुशलता पैतृक शिक्षा पर ही आधारित थी। विभिन्न कारीगर अपने घरों में ही कार्य करते थे और परिवार के सदस्यों से ही कार्य सीखते थे उनके उद्योगों की शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं था। ज्यादातर कारीगर निर्धन ही थे इस कारण उद्योगों का अधिक विकास संभव नहीं हो सका। थोड़ा बहुत विकास राजकीय संरक्षण अथवा व्यक्तिगत प्रयासों के कारण ही हुआ था जो समय के साथ-साथ तथा उत्तर मुगल कालीन मुगल बादशाहों की योग्यता एवं अव्यवस्था के कारण भारतीय उद्योगों को भारी नुकसान हुआ उद्योगों का शेष विनाश कार्य अंग्रेजी शासन काल में भारतीय उद्योगों एवं दस्तकारी व्यवस्था आदि का उपनिवेशीकरण से पूर्ण हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *वर्मा हरिश्चन्द्र, मध्यकालीन भारत, भाग 2, 1540 –1761,दिल्ली,*
2. *मनूची , स्टोरिया डी मोगोर, अनुवाद विलियम इर्विन भाग 2, लंदन।*
3. *पेल्सर्ट, जहांगीरकालीन भारत, अनुवाद बी एल भड़ानी, दिल्ली।*
4. *टैवर्नियर, ट्रेवल्स इन इंडिया, सम्पादन बी बाल, भाग 2, लंदन।*
5. *फ़ज़ल अबुल, आईन – ए – अकबरी, अनुवाद ब्लौचमैन, भाग 1, दिल्ली।*
6. *बारबोसा, बुक ऑफ दुआर्ट्रे बारबोसा, भाग 2।*

7. चंद्र सतीश, हिस्ट्री ऑफ़ मीडिवल इंडिया, दिल्ली।
8. हबीब इरफान, भारत का आर्थिक इतिहास।
9. इंग्लिश फैक्ट्रीज इन इंडिया, सम्पादक डब्लू फॉस्टर 1618 – 1621।